# भारत की वृद्धि को पुन: प्रदीप्त करने के लिए विचार और कार्य तथा पुन: प्राप्ति को मूर्त रूप देना*

के. सी. चक्रवर्ती

महामहिम डॉ. आर्यकुमार जगेसर, भारत में मॉरिशस के राजदूत; डॉ. अजय पांडे, डीन, आइआइएम, अहमदाबाद; पीजीपीएक्स चेयरपर्सन प्रोफेसर अनुराग अग्रवाल, आइआइएम के अन्य संकाय सदस्य और छात्रो। मुझे कनेक्शन 2013 में आमंत्रित करने के लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूँ। मैं समझता हूँ कि इसका आयोजन वार्षिक रूप से कार्यपालकों के लिए प्रबंधन में एक वर्षीय स्नातकोत्तर कार्यक्रम के छात्रों द्वारा आयोजित किया जाता है, जो उद्योग और शिक्षा जगत को एक स्थान पर ला कर उन वर्तमान मुद्दों पर विचार मंथन के लिए होता है, जिनका सामना देश कर रहा है। वास्तव में, आज की प्रातः बेला में यहाँ उपस्थित हो कर आज और कल के व्यवसाय अग्रणियों के साथ और उनके साथ भी, जो कल के व्यवसाय अग्रणियों को तैयार करने में लगे हुए हैं, अपने विचारों को साझा करने का अवसर मिलने पर मुझे हर्ष हो रहा है। मुझे तनिक भी संदेह नहीं है कि जिस समूह को मैं आज संबोधित कर रहा हूँ, वह अपने विचारों और कार्यों से हमारी अर्थव्यवस्था का भविष्य तय करने में प्रमुख भूमिका निभायेगा। विचार हमेशा अर्थव्यवस्था में वृद्धि को आकार देते हैं, लेकिन शायद इस सम्मेलन की विषय-वस्तु, यथा, ''भारत विकास कर रहा है : कार्य करने के लिए विचार'', पहले की तुलना में आज अधिक प्रासंगिक है। आप सभी जानते हैं कि हमारी अर्थव्यवस्था संकटपूर्ण समय से गुजर रही है, जिसमें पिछले दो वर्षों से गिरावट जारी है, जो सत्रह तिमाहियों के न्यून स्तर 4 प्रतिशत के निकट आ गयी है। इस संधिकाल में यह हमारा दायित्व है कि हम अपनी अर्थव्यवस्था का भावी मार्ग तय करें, चाहे तो वृद्धि की पुनःप्राप्ति हो या इसकी गिरावट जारी रहे, और भारत की दीर्घावधि धारणीयता को जोखिम में डालें। तथापि, हमें विचारों, जो पुनःप्राप्ति को आकार दें और कार्य, जो इन विचारों को वास्तविक पुनःप्राप्ति एवं वृद्धि मे रूपांतरित करें, दोनों का संयोग करने की आवश्यकता है। यह आज मेरी बातचीत का विषय होगा।

2. मैं केवल चार साधारण तथ्यों को अपनी बातचीत में शामिल करूँगा। पहला, आर्थिक वृद्धि के लिए विचार कैसे और क्यों महत्वपूर्ण होते हैं। दूसरा, किस प्रकार हम विचारों को वृद्धि के लिए आवश्यक शर्त मानते हैं, लेकिन इन विचारों को कार्य रूप देना ही वृद्धि का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए आवश्यक शर्त होती है। तीसरा, कौन से संभव विचार और नीतियाँ हो सकती हैं, जो भारत की वृद्धि को पुनः धारणीय पथ पर वापस ला सकती हैं। चौथा, भारत के गिरते वृद्धि स्तर को पुनः उच्च स्तरों पर लाने के लिए व्यवसाय के लोग और वित्तीय बाजार क्या कुछ कर सकते हैं। सच में, ये विचार अंतिम शब्द नहीं हैं, लेकिन ये ऐसी प्रवृत्तियाँ हैं, जो और अधिक विचारों और सोच को उत्तेजित करने के लिए हैं। मुझे निश्चय है कि आइआइएम, अहमदाबाद, जो दुनिया भर में व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट संस्था के रूप में जाना जाता है, इस वाद-विवाद में और अनेक विचारों को सम्मिलित कर सकेगा, जिसकी शुरुआत आज मैं कर रहा हूँ।

3. विचार किस प्रकार से वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण होते हैं? हम सभी जानते हैं कि विचार आविष्कारों की अगुआई करते हैं, जैसे कि भाप का इंजन, जिसने बदले में औद्यौगिक क्रांति को जन्म दिया। तथापि, यह आवश्यक नहीं है कि विचारों के परिणामस्वरूप हमेशा आविष्कार और खोज होती रहे। सरल प्रबंधकीय नवोन्मेष उत्पादकता को बढ़ा सकता है, जो वृद्धि का आधार बनती है। आइए, मैं इसे स्पष्ट करता हूँ।

## वृद्धि के लिए विचार महत्वपूर्ण होते हैं

4. यह तथ्य कि विचारों ने सबसे बड़े आर्थिक विस्तार को प्रेरित किया है, हमारे आर्थिक इतिहास में गहराई से दर्ज है। जो विचार मानव की बुनियादी इच्छाओं, यथा, भोजन, वस्त्र और आवास, को पूरा किये जाने की आवश्यकता से उद्भूत हुए, उन्होंने मानव जाति को महान नदी-घाटी सभ्यता के काल में, जो 3300 बीसी के आसपास नील, टिगरिस-युफ्रेट्स, ह्वांग हो और

* 25 अक्तूबर 2013 को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, अहमदाबाद द्वारा आयोजित पीजीपीएक्स कनेक्शन कॉन्क्लेव 2013 में डॉ. के.सी.चक्रवर्ती, उप गवर्नर, भारतीय रिज़र्व बैंक, द्वारा दिया गया प्रमुख भाषण। डॉ. मृदुल सागर और श्री एन.के.गायोन, द्वारा दी गयी सहायता को कृतज्ञतापूर्वक अभिस्वीकार किया जाता है

इंडस वैली में फल फूल रही थी, संगठित आर्थिक व्यवहार में शामिल होने के लिए प्रेरित किया।

5. 18वीं सदी की औद्योगिक क्रांति विचारों को एकत्र करने का एक अन्य उदाहरण है, जिसने द्रुत आर्थिक प्रगति के लिए मंच तैयार किया। आविष्कार और नवोन्मेष, यथा, भाप का इंजन, लोहा और वस्त्र निर्माण, जिन्होंने आधुनिक कारखानों और कारपोरेट प्रणालियों की अगुआई की, ने न केवल ब्रिटिश अर्थव्यवस्था को रूपांतरित किया, अपितु शेष विश्व में भी ये कालक्रम से विस्तारित हुए। इन विचारों के परिणामस्वरूप ऐसे आविष्कार हुए हो सकते हैं, जिन्होंने प्रौद्योगिकी प्रगति को प्रेरित किया, लेकिन ये आविष्कार से कहीं अधिक थे। ये वस्तुतः विचारों की एक शृंखला थे, जो एक दूसरे से मिल कर विचारों के बीच इंटरफेस बन गये। उदाहरण के लिए भाप का इंजन बनाना संभव नहीं होता, यदि लौह अयस्कों को पिघलाने और ईंधन के शोधन की तकनीकों में प्रगति नहीं हुई होती, जिसके चलते कोयले का आर्थिक उपयोग किया जाने लगा। इसने, बदले में, रसायन उद्योग की अगुआई की, जिसने उपभोक्ता वस्तुओं की एक शृंखला प्रस्तुत की, यथा, साबुन, शीशा, आदि। यह भी, कि इन प्रौद्योगिकी परिवर्तनों ने राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को प्रेरित किया, जिसके कारण सोच के तरीके में बदलाव आया। यूरोपीय समाज, जो एक समय में कोपरनिकस और गैलिलियो को सहन नहीं कर सकता था, वैज्ञानिक ढंग से सोचने लगा और उसने मुक्त व्यापार जैसे विचारों का संवर्धन किया, जिसका निहितार्थ वृद्धि और कल्याण के लिए होता है।

6. वृद्धि का पोषण करने में विचारों की ताकत को देखते हुए, यह खेद का विषय है कि हम इस पर पर्याप्त ध्यान नहीं देते। हमें मेरी क्यूरी की सलाह को नहीं भूलना चाहिए, 'लोगों के बारे में कम जिज्ञासु बनें और विचारों के बारे में अधिक जिज्ञासु बनें'। इसी प्रकार के लहजे में अमेरिका की प्रथम महिला इलीनोर रूजवेल्ट ने एक बार कहा था 'महा बुद्धिमान विचारों के बारे में चर्चा करते हैं; औसत बुद्धिमान घटनाओं के बारे में चर्चा करते हैं; और अल्प बुद्धिमान अन्य लोगों के बारे में चर्चा करते हैं'।

## वृद्धि के लिए विचारों को कार्य रूप में परिणत करना

7. फिर भी, विचार अपने आप में काफी नहीं होते हैं। जेम्स रसेल लॉवेल, 19वीं सदी के रूमानी कवि, ने कहा था ''जगत में सभी सुन्दर भावनाएँ एक प्रेमपूर्ण कार्य से कम महत्व रखने वाली होती हैं''। विचारों को कार्यरूप में परिणत करना महत्वपूर्ण होता है, जैसाकि महात्मा गाँधी ने कहा था, 'कार्य से हमारी प्राथमिकताओं की अभिव्यक्ति होती है'। तथापि, मैं इसमें यह जोड़ना चाहता हूँ कि विचारों को वास्तविकता का रूप देना कठिन होता है। फ्रांसीसी उपन्यासकार, ऑनर डि बाल्जाक ने एक बार कहा था, 'बैठे हुए कुछ देखना आसान होता है, लेकिन जो बात कठिन होती है, वह है खड़ा हो जाना और काम करने लग जाना।' अक्सर ज्ञान का अंतराल उतना ज्यादा नहीं होता, जितना कि शौर्य का होता है, क्योंकि विश्राम के समय मन में उठे विचारों को मूर्त रूप देने हेतु परिश्रम करने के लिए शौर्य की जरूरत होती है।

8. उत्पादक विचार अक्सर हमारी सामाजिक आवश्यकताओं से उद्भूत होते हैं, और वे स्वयं अपना संक्रमण कार्य में करते हैं। सिंगर के मन में सिलाई मशीन का आविष्कार करने का विचार तब आया, जब उसने अपनी पत्नी को सिलाई के कार्य में कठिन परिश्रम करते देखा और उसके मन में इसके बारे में कुछ करने की इच्छा हुई, और उसके विचारों ने कार्य रूप में परिणत होकर एक वाइब्रेटिंग शटल सिलाई मशीन का इजाद किया। इसने अब तक प्रचलित अनुप्रस्थ शटल डिजाइनों में भारी परिवर्तन किया और वस्त्र के उत्पादन को उच्च गति से अधिक उत्पादन करने वाला उद्योग बना दिया, जिसने फिर कभी पीछे मुड़ कर नहीं देखा।

9. कार्य विभिन्न रूपों में हो सकता है और उसके भिन्न-भिन्न परिणाम एक ही प्रकार के विचारों से मिल सकते हैं। हेनरी फेयॉल ने हमें प्रशासन का सिद्धांत दिया, जिसने संगठनात्मक प्रबंधन के उन सिद्धांतों और व्यवहारों की नींव रखी, जिनका प्रतिपादन उनकी पुस्तक 'जेनरल एंड इंडस्ट्रियल मैनेजमेंट (फ्रांसीसी भाषा में 1916 में प्रकाशित और अंग्रेजी में 1949 में प्रकाशित), ने व्यवसाय प्रबंधकों को कई पीढ़ियों तक अपने कार्य को कारगर ढंग से निष्पादित करने में मदद की। इसने उन्हें गलतफहमियों को दूर करने, कार्य में बेहतर समन्वय रखने में भी मदद की, जिसके परिणामस्वरूप संगठन की दक्षता बढ़ी।

10. क्वर्टी की का आविष्कार करना एक महान विचार था, जिसने 1870 के दशक में मूर्त रूप धारण किया और

इसने टाइपराइटर के केवल ऊपरी हिस्से का उपयोग करना आसान बना दिया, जिससे उसमें रिबन का प्रयोग किया जाना बंद हो गया, जो पहले उलझ जाया करते थे। यह एक विचार समय की कसौटी पर खरा उतरा और अब यह हमारे लैपटॉप और अनेक मोबाइलों के की-बोर्ड का आधार बना हुआ है। यह अनुभव हमें बताता है कि विचारों को कार्य रूप में परिणत किये जाने की आवश्यकता होती है, जिनका प्रभाव बुद्धि पर होता है, क्योंकि विचारों की स्वीकार्यता और उनके उपयोगकर्ता-अनुकूल होने से स्थायी लाभ प्राप्त होता है। विक्टर ह्यूगो की प्रसिद्ध उक्ति है, 'सेनाओं के आक्रमण को रोका जा सकता है, लेकिन उस एक विचार को नहीं, जो सामने आ गया है।'

11. तथापि, वृद्धि के लिए विचारों को कार्य रूप में परिणत किया जाना होगा और इसी संदर्भ में आइआइएम जैसी प्रमुख संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्षों से आपकी संस्था ने ज्ञान के अंतराल को पाटने का उल्लेखनीय कार्य किया है। मेरा विश्वास कीजिए, प्रणाली में उत्तम विचारों की कमी नहीं है। तथापि, जिस चीज की कमी है, वह है इन विचारों को कार्यान्वित करने और फलप्रद बनाने के लिए साहस का अभाव। आगे बढ़ते हुए, आइआइएम को इस साहस अंतराल को, जो समाज में देखा जाता है, भरने की दिशा में काम करना होगा।

## विचार और नीतियाँ भारत की वृद्धि को पुनः धारणीय पथ पर ले आयेंगी

12. अब, विचारों और कार्यों के संबंध में ये छोटी-छोटी कहावतें भारत में धारणीय पुनःप्राप्ति को आकार देने के लिए किस प्रकार प्रासंगिक हैं? यह संबंध स्पष्ट नहीं भी दिखाई दे सकता है, लेकन बहुत कुछ ऐसा है, जो उपर्युक्त सादृश्यता से एकत्र किया जा सकता है। मैं चार साधारण विचारों और कार्यों की चर्चा करूँगा, जिनको कार्यान्वित किये जाने से भारत वृद्धि के पथ पर अग्रसर हो सकता है। सच में, यह विचारों की एक संपूर्ण सूची नहीं है, केवल यह चित्रण है कि हम कितनी आसानी से अपनी वृद्धि को वापस ले आ सकते हैं और ले आयंगे। यहाँ मैं इस बात पर भी जोर देना चाहता हूँ कि हमारी समस्याएँ दुनिया में अन्यत्र सामना की जाने वाली समस्याओं से अधिक आसान हैं और एक अतिरिक्त लाभ यह है कि हम अपनी समस्याओं से अवगत हैं।

13. क्या जो विचार भारत के वृद्धि संवेग को बहाल करेंगे वे व्यष्टि या समष्टि अर्थशास्त्र से संबंध रखते हैं? मेरा मानना है कि भारत को वृद्धि-पथ पर वापस लाने के लिए हमें अधिक से अधिक समष्टि स्तर की तुलना में व्यष्टि स्तर पर ध्यान रखना होगा। तथापि, यह परिवर्तन लाने का विचार सभी स्तरों पर 'थॉट लीडर्स' से आना चाहिए। उदाहरण के लिए, हम यह उम्मीद नहीं कर सकते कि आर-सेटीज उद्यमकर्ता पोषण और परिवर्तनशील प्रौद्योगिकी अनुकूलन के लिए विचारों के अग्रदूत बन कर आयें। ये विचार मुख्य रूप से आइआइएम और आइआइटी जैसे बुद्धि-संचय गृहों से आने होंगे, जो तब बदले में आर-सेटीज में निष्पादित होंगे। अतः, यह महत्वपूर्ण है कि हमें अधिकाधिक आइआइएम और आइआइटी ग्रैजुएट चाहिए, जो आर-सेटीज के लिए उद्यम-वृत्ति विचारों को विकसित कर सकें।

14. दूसरा विचार है आर एंड डी तथा प्रबंधकीय नवोन्मेष के माध्यम से नयी सोच को बढ़ावा देना। आपको जान कर आश्चर्य होगा कि विश्व बैंक के डाटाबेस के अनुसार, भारत अपने जीडीपी का केवल 0.75 प्रतिशत खर्च आर एंड डी पर करता है, जबकि ओइसीडी देशों में यह खर्च 2.5 प्रतिशत, चीन में 1.7 प्रतिशत, रूस में 1.3 प्रतिशत और ब्राजील में जीडीपी का 1.2 प्रतिशत खर्च आर एंड डी पर किया जाता है। हाल में, हम अपनी वैज्ञानिक प्रगति पर अधिक ध्यान नहीं दे रहे हैं। प्रौद्योगिकी और संगठनात्मक प्रगति होने के बाद, जिनके कारण हरित क्रांति, श्वेत क्रांति हुई और बाद में वस्त्र, मशीनी औजार और सॉफ्टवेयर निर्यात किये जाने लगे, हमें लगता है कि हमने अपना संवेग खो दिया है। कृषि का उदाहरण हमारे सामने है। क्या हम अपने अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में कृषि को बढ़ावा दे रहे हैंऔर अच्छी उपज प्राप्त कर रहे हैं? जैव प्रौद्योगिकी और आनुवंशिक इंजीनियरी का प्रयोग किये जाने की बहुत अधिक संभावना हम देखते हैं, ताकि अधिक से अधिक हितकारी फसल उगायी जा सके। इन क्षेत्रों पर हमारा ध्यान जाना चाहिए। हमें युक्तियुक्त उत्पादकता-निविष्टियाँ लानी चाहिए, जो पंजाब और आंध्र प्रदेश से ला कर बिहार और बंगाल के पिडड़े क्षेत्रों में उपयोग की जायेंगी। हमें उन्नत अर्थव्यवस्थाओं की तुलना में अधिक से अधिक खर्च आर एंड डी पर करना चाहिए।

15. तीसरा विचार यह है कि किस प्रकार लघु और मझौले उद्यमों (एसएमई) को यह महसूस कराया जाये कि उनकी वास्तविक क्षमता क्या है और यह भी सुनिश्चित किया जाये कि इस क्षेत्र को संस्थागत वित्त का उचित हिस्सा प्राप्त होता है। एसएमई उद्यमी यद्यपि प्रमुख उत्पादन प्रक्रिया में प्रवाण होते हैं, फिर भी अन्य कार्यों में उन्हें सहायता की आवश्यकता होती है, ताकि वे अपने व्यवसाय का पोषण कर सकें। इस बात की आवश्यकता है कि एसएमई सेवा-केंद्र आरंभ किये जायें, जो कि सामूहिक आधार पर आइआइएम ग्रैजुएटों द्वारा खोले जा सकते हैं, ताकि वे अनुसंधान कर सकें और उत्पादकता प्रबंध, विपणन और वितरण के संबंध में विचार प्रस्तुत कर सकें। उनके अनुसंधान में छोटी फर्मों के पर्याप्त संस्थागत वित्तपोषण के लिए आवश्यकता को भी ध्यान में रखना होगा, क्योंकि ये फर्में बड़ी फर्मों की तुलना में अधिक बाध्यताओं का सामना करती हैं।

16. चौथा विचार वस्तुतः देश में सार्थक वित्तीय समावेशन देख पाने के मेरे चिर अभलषित लक्ष्य से उद्भूत है। अलग-अलग परिवारों को, जो वित्तीय रूप से वंचित हैं, वित्त तक पहुँच में सुधार करना एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक नीति लक्ष्य है, जिसके बिना धारणीय वृद्धि और विकास संभव नहीं है। हमें जरूरतमंद उद्यमियों को वित्त की उपलब्धता सुनिश्चित करनी चाहिए, जिसके लिए ऋण वितरण को इन तक विस्तारित किया जाना होगा। निस्संदेह, इसमें इस तथ्य को भूलना नहीं होगा कि आकांक्षी उद्यमियों को ऋण-पात्र भी होना चाहिए। रिज़र्व बैंक ने अपनी ओर से वित्तीय समावेशन का संवर्धन करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाये हैं। किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) योजना ने किसानों को बैंक ऋण तक पहुँच प्राप्त करने में काफी मदद की है, जबकि बैंकों ने जीसीसी योजना के अंतर्गत कृषीतर उद्यमकर्ता कार्यकलाप के लिए ऋण का वितरण किया है। वर्ष 2012-13 के दौरान, सरकारी और निजी क्षेत्र के बैंकों ने 3.5 मिलियन अतिरिक्त के सीसी और 0.8 मिलियन जीसीसी जारी किये। लेकिन सर्वव्यापी वित्तीय समावेशन अभी भी दुर्ग्राह्य बना हुआ है। इसके बारे में हम क्या कर सकते हैं? हमारे बैंक अभी देश के दूरवर्ती इलाकों में बैंकिंग सेवाएँ पहुँचाने के लिए एक किफायती सुपुर्दगी मॉडल विकसित करने के लिए संघर्ष कर रहे हैं। यह बात अबोधगम्य है कि क्यों एक ऐसा देश, जो विश्व को प्रौद्योगिकी समाधान देने के लिए एक प्रांगण है, हमारे बैंकों के लिए एक किफायती समाधान विकसित नहीं कर सकता है। हमें अधिक क्रमबद्ध रूप से प्रौद्योगिकी को काम में लाने की आवश्यकता है, ताकि ऐसी सेवाओं का कोटि उन्नयन घटी हुई लागत पर सुनिश्चित किया जा सके, हमें अपने वित्तीय समावेशन से संबंधित प्रयासों को इस दिशा में प्रेरित करना चाहिए कि निर्धन लोगों की आवश्यकता क्या है और वे क्या माँग कर सकते हैं, बनिस्बत इसके कि उन पर आपूर्ति-नीत समाधान थोपे जायें। इस संदर्भ में मैं आज यहाँ उपस्थित आइआइएम छात्रों से अपेक्षा करूँगा कि वे मार्गदर्शक के रूप में काम करें और यह सुनिश्चित करें कि वित्तीय समावेशन केवल एक फैशन बन कर नहीं रह जाये, बल्कि एक राष्ट्रीय आवेश बने। यह उम्मीद है कि सभी व्यक्तियों तक संस्थागत वित्त की पहुँच सुनिश्चित किये जाने से ही जीडीपी में 1.5 प्रतिशत की बढ़ोतरी हो जायेगी। जो आवश्यक है, वह है उत्तम नियंत्रण। प्राधिकारियों, यथा, सरकार, द्वारा उत्तम नियंत्रण रखे जाने के साथ आइआइएम और आइआइटी के शिक्षित ग्रैजुएटों के बीच जिंदादिली भी लौटनी चाहिए। हम इस समय क्षीयमाण जड़िमा, खिन्नता, एक विषादपूर्ण भावना के साथ नीचे आ गये हैं कि कुछ भी नहीं हो रहा है या होने वाला नहीं है। हमें इस विषाद की अवस्था को दूर कर आशावादी भावना और आशावादी सोच को पुनरूज्जीवित करना होगा।

17. हमें अक्सर हमारे बढ़ते राजकोषीय घाटे का स्मरण कराया जाता है। मैं यह बात जोर दे कर कह सकता हूँ कि कुछ बहुत ही सरल उपाय हैं, जिन्हें अपनाये जाने से घाटे के एक बड़े हिस्से को रोका जा सकता है। हमें अपनी प्रणाली में बरबादी रोकनी होगी और आर्थिक सहायता में कटौती करनी होगी। शहरी परिवहन प्रणाली, बिजली वितरण, एलपीजी और डीजल में। यदि हम अपना नियंत्रण सुधार सकें और प्रणाली में इस प्रकार की बरबादी कम कर सकें, तो राजकोषीय घाटा स्वतः कम हो जायेगा। आर्थिक सहायता का कुशल उपयोग खर्च को घटायेगा, जो बदले में ईंधन का आयात घटायेगा और चालू खाता घाटा को कम करने में मदद करेगा।

18. अतएव, हमारे लिए, जनसाधारण के लिए सामान्य रूप से और सरकार के लिए विशेष रूप से यह उचित होगा के ईंधन संरक्षण को एक राष्ट्रीय प्राथमिकता के रूप में अपनाया जाये। हमें आर्थिक सहायता प्राप्त होने को अधिकार के रूप में नहीं मानना चाहिए, जो उनके कुशल और आर्थिक उपयोग

को क्षति पहुँचाता है। हमें यह अवश्य समझना होगा कि हमारी अर्थव्यवस्था के लिए समय बहुत बुरा है और इसलिए हमें छोटा-सा त्याग करने के लिए तैयार होना चाहिए। हमें मजदूरी में थोड़ी-सी वृद्धि होने पर भी उसी में जीवन-यापन करना सीखना होगा। यह समाज के सभी वर्ग के लोगों पर, विशेष वर्ग से संबद्ध लोगों पर भी, लागू होता है।

## आधारभूत संरचना

19. देश में आधारभूत संरचना के उपयोग का एक अशांत करने वाला पहलू यह है कि हम सर्वोत्तम किस्म की आधारभूत संरचना की माँग करते हैं, लेकिन उन तक मुफ्त पहुँच प्राप्त करना चाहते हैं। भारत में वीआईपी को सबसे पहले आर्थिक सहायता और बुनियादी सेवाओं तक पहुँच प्राप्त होती है और इस बात की चिंता नहीं की जाती कि यह गरीबों और जरूरतमंदों तक भी पहुँचती है या नहीं। हमें इस संस्कृति को नैतिक जोखिम बन जाने से रोकना होगा। यहाँ फिर से उत्तम नियंत्रण की बात सामने आती है। जबकि आधारभूत संरचना के विषय पर मैं यह भी कहना चाहता हूँ कि केवल ऋण का सहारा ले कर आधारभूत संरचना की वृद्धि का निधीयन नहीं किया जा सकता है। जिस प्रकार की स्थिति है, रुकी हुई आधारभूत संरचना परियोजनाओं में से अनेक का वित्तपोषण ऋण द्वारा किया गया था और उनमें प्रवर्तक की इक्विटी का योगदान अल्पतम था। हमने देखा है कि ऋण अक्सर होल्डिंग कंपनी से जुटाया जाता है और उसे इक्विटी के रूप में अनुषंगी उद्यमों या एसपीवी में ले जाया जाता है। यह एक जोखिमपूर्ण प्रथा है। कारपोरेट समूह काफी सुविधाप्राप्त हो गये हैं और उनकी ऋण चुकौती क्षमता गंभीर रूप से बाधित हुई है। रुकी हुई आधारभूत संरचना परियोजनाओं के प्रवर्तक में थोड़ा सा भी उत्साह नहीं होता कि वे परियोजनाओं को चालू करें। देश के भावी व्यवसाय प्रबंधकों के रूप में, मैं आपसे आग्रह करूँगा कि आप सफल व्यवसाय के संचालन में इक्विटी के महत्व को समझें, क्योंकि यह प्रबंधन के लिए अत्यधिक जोखिमों से दूर रहने के लिए प्रोत्साहन का काम करता है। हमें उन विचारों की आवश्यकता है, जो नयी इक्विटी जुटाने में हमें समर्थ बनायें।

## समापन संदेश

20. समापन करते हुए मैं आपको तीन संदेश देना चाहता हूँ, जो मैं हमेशा करता हूँ, जब कभी मुझे छात्रों के साथ संवाद करने का अवसर मिलता है। मेरा पहला संदेश यह है कि आपको 'तीसरी पीढ़ी की साक्षरता' प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। आप सभी ने पहली पीढ़ी और दूसरी पीढ़ी की साक्षरता प्राप्त कर ली होगी, अर्थात्, किताबें पढ़ कर विषय का ज्ञान और कंप्यूटरों और सूचना प्रौद्योगिकी के बारे में ज्ञान प्राप्त किया होगा। तीसरी पीढ़ी की साक्षरता से मेरा मतलब है 'सूचना साक्षर' होना। मैंने कहीं पढ़ा था कि हम प्रतिदिन 2.5 क्विंटिलियन बाइट्स के आँकड़े तैयार करते हैं और पिछले दो वर्षों में 90 प्रतिशत से अधिक आँकड़े तैयार किये गये हैं। मैं नहीं जानता कि एक क्विंटिलियन में कितने शून्य लगाये जाते हैं, लेकिन इसका यह निश्चित अर्थ है कि इसमें सूचना का भंडार होता है। प्रत्येक दिन आपके व्यावसायिक और वैयक्तिक जीवन में अनेक सूचनाएँ प्राप्त होंगी और इसीलिए मैं चाहता हूँ कि आप सूचना साक्षर बनें। आपके इर्द गिर्द जो कुछ भी हो रहा है उससे अवगत रहने की चेष्टा करें। आपमें हमेशा अधिक से अधिक सीखने की ललक होनी चाहिए और ज्ञान के लिए अपनी उत्सुकता को बनाये रख कर आपको अपना ज्ञान अद्यतन बनाये रखना चाहिए। सूचना साक्षरता में केवल सूचना की तलाश करना परिकल्पित नहीं है, बल्कि उसे आत्मसात करने की योग्यता विकसित करना और उसका प्रयोग निर्णय लेने में किया जाना है। आपके लिए मेरा दूसरा संदेश यह है कि जीवन में कभी आत्मसंतुष्ट न बनें। सकारात्मक सोचें और आत्मसंतुष्टि से बचें। यह उन लोगों के लिए और भी महत्वपूर्ण होता है, जो वित्त के क्षेत्र में अपना व्यापार करते हैं, क्योंकि आत्मसंतुष्टि के कुछ पलों का अनर्थकारी परिणाम हो सकता है। मेरा तीसरा और अंतिम संदेश यह है कि आप कुसमय के लिए तैयारी करके रखें। अपने पेशे में आपको निश्चित रूप से कठिन स्थिति का सामना करना होगा। यदि आप उपर्युक्त तीन संदेशों का अनुसरण करेंगे, तो अपने जीवन और पेशे में आप हमेशा सफल होंगे। जो ज्ञान आपने भारत की इस प्रमुख संस्था में प्राप्त किया है, वह आपके लिए आपके पसंदीदा क्षेत्र में सफलता के द्वार खोलेगा। मैं आपके लिए फ्रांसिस बेकन का एक उद्धरण प्रस्तुत करता हूँ, जो आपके जैसे युवक एवं युवतियों की शक्ति का समाहार इस प्रकार करता है, ''युवा व्यक्ति निर्णय करने की तुलना में आविष्कार करने के लिए उपयुक्त होते हैं; परामर्श देने की तुलना में निष्पादन करने के लिए उपयुक्त होते हैं; और स्थापित व्यवसाय की तुलना में नयी परियोजनाओं के लिए उपयुक्त होते हैं''। मुझे आशा

है कि आपमें से अनेक अपने विचारों का पोषण उद्यमकर्ता उद्यमों में करेंगे और देश की अर्थव्यवस्था में वास्तविक योगदान करेंगे।

मैं एक बार पुनः आयोजकों का धन्यवाद करता हूँ कि उन्होंने मुझे इस सेमीनार में आमंत्रित किया और देश के सबसे तेजस्वी मस्तिष्क वाले युवाओं से संवाद करने का अवसर प्रदान किया। मैं आपको अगले दो दिनों तक होने वाले और आपको तल्लीन रखने वाले सफल संवाद में व्यस्तता की कामना करता हूँ। मुझे आशा है कि आप अपने विचार-विमर्श के दौरान उस बिंदु पर चिंतन करेंगे, जो मैंने आपके समक्ष रखा है, जो यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि विचारों का न केवल सृजन होता है, बल्कि ने कार्य-निष्पादन में भी अपनी जगह बना लेते हैं। यदि उत्तम विचारों को विकसित किया जाये और उनके अनुसार कार्य किया जाये, तो भारत शीघ्र ही उच्च वृद्धि के प्रक्षेप-पथ पर लौट आयेगा और विश्व व्यवस्था में अपना सही स्थान प्राप्त करेगा।

धन्यवाद !